बाबा ने मानवता का दीप जलाया

मूल्यों के बिना मनुष्य का जीवन पशु तुल्य है, यह केवल कोरी कल्पना नहीं बल्कि उन तमाम महापुरुषों, महात्माओं तथा दिव्य पुरुषों के वचन हैं जिन्होंने अपनी तप, त्याग, तपस्या और जीवन मानवता की सेवा में लगा दी। अपने लिए तो सब जीते है परन्तु महापुरुष की उपाधि उन्हें मिलती है जो मानवता की सेवा में अपने जीवन को समर्पित कर देते हैं। जब इस संसार में बिभत्स घटनायें मनुष्यता को निगल रही थी, आसुरीयता का ताण्डव बढ़ रहा था, आपसी सम्बन्धों की बलि चढ़ रही थी। उस समय एक ऐसी महान विभूति का इस पापाचारी दुनियां में जन्म हुआ। उस महान आत्मा को परमात्मा ने निमित्त बनाकर शांति और सुखमय वाली दुनियां का दायित्व सौंप आध्यात्मिक क्रांति के बिगुल का सूत्रपात किया।

हम प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा की बात कर रहे हैं। एक साधारण तन में जन्म लेकर लाखों लोगों के जीवन में मनुष्यता के गुणों को तप, ध्यान और साधना से शुद्ध कर देवताई मार्ग के राही बनने की प्रेरणा दी। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा का जन्म सन् 1876 में सिन्ध प्रान्त (अभी पाकिस्तान में है) के एक कुलीन और साधारण परिवार में हुआ। बचपन में ही इनके माता का देहांत हो गया। इनके बचपन का नाम लेखराज था। बचपन से ही बड़े ओजस्वी, तेजस्वी और दयालु प्रकृति के थे। किसी भी मनुष्यात्मा का संकट इनसे सहन नहीं होता था हर स्थिति में उस व्यक्ति की मदद करना इनके व्यक्तित्व में शुमार था। जब ईश्वर की अराधना करने बैठते तो सर्व प्रथम पूरे विश्व की मनुष्यात्माओं के दुःख दर्द मिटाने के लिए करते थे। लेखराज बचपन से इतने सौम्य और असाधारण थे कि इन्हें लोग प्यार से दादा कहते थे। दादा ने बड़े होकर हीरे जवाहरातों के व्यापार में लग गये। देखते ही देखते इनके व्यापार की ख्याति भारत सहित आस-पास के कई देशों में फैल गयी। इनका व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली था कि जो कोई भी एक बार मिलता तो उन्हीं का हो जाता। कई राजायें तथा महाराजायें यहां तक कहते कि लेखराज जी राजा तो आप को होना चाहिए। परन्तु दादा सदैव मानवीय सेवाओं की बात करते। कई बार दादा को मनुष्यात्माओं की पीड़ा परेशान करती और वे मन ही मन सोचते कि कैसे इस संसार का उद्धार होगा, जिसमें लोग सुखी और सम्पन्न हों।

साठ साल की उम्र में दादा लेखराज के जीवन में एक महान परिवर्तन आया। एक दिन वे वाराणसी में अपने मित्र के यहां थे कि रात्रि में उन्हें इस पुरानी दुनियां के महाविनाश की भयंकर लीला तथा नयी दुनियां की स्थापना के साथ-साथ विष्णु चतुर्भुज का साक्षात्कार हुआ। यह खेल कुछ समय तक

चलता रहा और उन्हें एक आवाज आयी कि इस दुनियां का महाविनाश होने वाला है और तुम्हें नयी दुनियां की स्थापना का महान कार्य करना है। यह बात दादा को समझ में नहीं आयी। दादा ने अपने जीवन में बारह गुरु किये थे। उन्होंने सोचा कि शायद यह खेल हमारे गुरुओं की ही देन है। जब उन्होंने इसके बारे में पूछा तो किसी के पास इसका उत्तर नहीं था। दादा समझ गए कि यह किसी अलौकिक शक्ति का ही कमाल है। इन प्रश्नों का हल शीघ्र ही उनके घर आने पर मिल गया और स्वयं ईश्वरीय शक्ति ने अपना परिचय परमात्मा शिव के रूप में दिया और कहा कि तुम्हें इस दुनियां के परिवर्तन का महान कार्य करना है। उस दिन से दादा को हीरे जवाहरातों का व्यापार कौड़ियों तुल्य लगने लगा। वे सदा मनुष्य के अन्दर छिपे सच्चे हीरे के पारखी बनने की बात सोचने लगे। इसके पश्चात् उन्होंने अपनी सम्पत्ति बेचकर एक ट्रस्ट की स्थापना की तथा भारत माता तथा वन्देमातरम् की गाथा को सत्यार्थ करते हुए दादा ने परमात्मा के आदेशानुसार माताओं बहनों को आगे रख इस कारवां का शुभारम्भ किया। परमात्मा का निर्देशन लगातार उन्हें मिलता रहा है और स्वयं परमात्मा ने उनका नाम प्रजापिता ब्रह्मा रखा और नई सृष्टि की स्थापना का महान कार्य सौपा।

इस तरह इस संस्था की स्थापना सन् **1937** में हैदराबाद सिन्ध में हुई। प्रारम्भिक काल में इस संस्था का नाम ओम् मण्डली रखा गया। इस महान कार्य के लिए ब्रह्मा बाबा को कई आसुरी शक्तियों का विरोध झेलना पड़ा। परन्तु ईश्वर की मार्गदर्शना में यह कारवां बढ़ता रहा। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने बिना विचलित हुए आसुरी शक्तियों का जबाब दैवी गुणों से दिया। अंत में विजय सत्य और दैवी गुणों की हुई। भारत पाकिस्तान विभाजन के बाद यह सन् **1950** में यह संस्था एकमात्र पर्यटन स्थल माउन्ट आबू, राजस्थान में आयी और यही से मानवता के दीप से दीप जलाने का कार्य प्रारम्भ हुआ। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने सभी मनुष्यात्माओं में छिपे अदृष्य दुश्मनों काम, क्रोध, लोभ आदि पांच विकारों को सच्चे दुश्मन के रूप में परिभाषित करते इनसे मुक्ति की राह बतायी। सभी धर्म, मठ, पन्त के लोगों का सम्मान करते हुए प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने कब्रदाखिल मनुष्यात्माओं को परमात्मा का सन्देश दिया तथा इस महान क्रांति में शरीक होने का सम्बल प्रदान किया। बाबा ने माताओं-बहनों को उस समय ऊंचा सम्मान दिया जब समाज में महिलाओं के अधिकारों की चर्चा तक नहीं होती थी। बाबा समझ गए थे कि बिना नारी शक्ति के इस संसार का परिवर्तन नहीं हो सकता। पुरुष प्रधान समाज में बाबा ने संस्था की बागडोर महिलाओं के हाथ में सौपी और स्वयं एक ट्रस्टी बन इसको आगे बढ़ाते रहे।

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने वैज्ञानिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से लोगों को आध्यात्मिक कारवां का मर्म समझाया और साइलेंस की शक्ति से आत्मा के अन्दर छिपे शक्ति पुंज तथा दैवी गुणों को जागृत

करने के लिए प्रेरित किया। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने गहन परमात्मा की याद और त्याग तपस्या द्वारा दैवीगुण धारी बन गये तथा 18 जनवरी 1969 को अपने नश्वर शरीर का त्याग कर बेहद सेवा हेतु फरिश्ता बन सूक्ष्मवतन वासी हो गये। बाबा आज भले ही हमारे बीच नहीं है परन्तु उनकी सूक्ष्म और शक्तिशाली दृष्टि से लाखों के जीवन में आध्यात्मिक प्रकाश सतत् प्रकाशमान हो रहा है।

सात दशक पहले बाबा ने जो मानवता का दीप जगाया वह आज एक महामशाल का रूप धारण कर चुका है, और छोटा सा कारवां पूरे विश्व में एक महाक्रान्ति का रूप ले चुका है। पवित्रता, वसुधैव कुटुम्बकम्, एकता, समरसता को स्थापित करने तथा आसुरी प्रवृत्तियों का समूल नाश करने का संकल्प लेकर यह संस्था एक वट वृक्ष का रूप धारण कर चुकी है। आज पूरे विश्व के 130 देशों में 9 लाख से भी ज्यादा लोग बाबा की पदचिन्हों पर चलते हुए स्वयं को दिव्य और श्रेष्ठ समाज की स्थापना में तन-मन-धन से सतत् प्रयत्नशील है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय इस 18 जनवरी को विश्व शांति दिवस के रूप में मना रही है। इस महान दिवस को लाखों लोग पूरे विश्व में मानवीय मूल्यों की स्थापना तथा विश्व शांति के लिए मौन रखेंगे तथा मेडिटेशन करेंगे। ऐसी महान तिथि पर इस विभूति को शत्-शत् नमन।

सौजन्य: ब्रह्माकुमारीज्

*****